वेदान्तसार

वेदान्त दर्शन - ब्रह्मसूत्र - बादरायण/व्यास

गौड़पादाचार्य
↓
गोविन्दपादाचार्य
↓
शंकराचार्य

→ 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है - 'वेद का अंत'

→ वेदान्त दर्शन का आधार - उपनिषद कहा जाता है।

→ वेदान्त दर्शन के तीन आधार हैं - उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता।

→ वेदान्त दर्शन - ब्रह्मसूत्र पर आधारित है।

→ ब्रह्मसूत्र को ब्रह्मसूत्र कहा जाता है क्योंकि इसमें ब्रह्म सिद्धांत की व्याख्या हुई है।

→ ब्रह्मसूत्र को ही — वेदांतसूत्र — लेखक — बादरायण
शारीरिक सूत्र
शारीरिक मीमांसा
उत्तरमीमांसा } भी कहा जाता है।

→ वैदिक काल में तीन प्रकार का साहित्य देखने में आता है :—
1 वैदिक मंत्र (वेदत्रय)
2 ब्राह्मण (वैदिककर्मकांड)
3. उपनिषद (दार्शनिक विचार)

→ उपनिषद - उप + नि + सद् - अर्थ - जो ईश्वर के समीप पहुँचाए या जो गुरु के समीप पहुँचाए

→ उपनिषद, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता को वेदान्त का प्रस्थानत्रयी या आधार कहा जाता है।

→ वेदान्त दर्शन के प्रथम आचार्य — गौड़पाद
वेदान्त दर्शन का चमोत्कर्ष — शंकरवेदान्त में

→ शंकराचार्य ने ही ग्यारह मूल उपनिषदों पर भाष्य-रचना की है।

→ गौड़पादाचार्य की — कारिका अद्वैतवेदान्त का प्रथम उपलब्ध ग्रंथ है।

→ कारिका को ही माण्डूक्य-कारिका, गौड़पाद कारिका या आगमशास्त्र भी कहते हैं। इसमें चार प्रकरण हैं —
आगम, वैतथ्य, अद्वैत और अलातशान्ति प्रकरण हैं।

डॉ॰ प्रियंका कुमारी (संस्कृत विभाग)
महाराजा कॉलेज, आरा।

* वेद - संहिता - ब्राह्मण - आरण्यक - उपनिषद्

→ वेदत्रयी - तीन वेद

→ स्वामी विद्यानंद विदेह प्रभृति मूलतः एक ही वेद मानते हैं। और चारों वेदों को चार अध्याय मानते हैं।

प्रथम अध्याय - ज्ञानकांड - ऋग्वेद
द्वितीय " कर्मकांड - यजुर्वेद
तृतीय " उपासना कांड - सामवेद
चौथा " विज्ञानकांड - अथर्ववेद

→ चारों वेदों का सम्बन्ध यज्ञ से है। यज्ञ करने में चार प्रकार की ऋत्विजों की आवश्यकता होती है। —

यथा —

1. ऋग्वेद — होता, ऋग्वेद का ऋत्विज जो ऋचाओं का पाठ कर यज्ञकार्य का सम्पादन करता है।

2. यजुर्वेद — अध्वर्यु — यजुर्वेद का ऋत्विज जो गद्यात्मक मंत्रों का पाठ कर यज्ञ सम्पन्न करता है।

3 सामवेद — उद्गाता — सामवेद का ऋत्विज जो मंत्रों का पाठ कर गाके सम्पन्न करता है।

4. ब्रह्मा अथर्ववेद — ब्रह्मा — अथर्ववेद का ऋत्विज, यज्ञ का अध्यक्ष माना जाता है। इसका कार्य यज्ञ की सभी प्रकार की देखभाल करना है।

* तैत्तिरीय उपनिषद में ब्रह्म को जगत कारण बताया गया है तथा "ब्रह्म" को पंचकोषों द्वारा समझाया गया है: -

1. अन्नमय कोष - स्थूल शरीर अन्न पर आश्रित है। अन्न ही परम सत्य है।
2. प्राणमय कोष - अन्नमय कोष के अन्दर प्राणमय कोष है। यह शरीर को गति प्रदान करता है।
3. मनोमयकोष - प्राणमय कोष के अन्दर मनोमय कोष है। मन ही परम सत्य है।
4. विज्ञानमयकोष - मनोमयकोष के अन्दर विज्ञानमय कोष है। यह बुद्धि पर निर्भर है।
5. आनन्दमयकोष - विज्ञानमय कोष के अन्दर आनन्दमय कोष है। यह आत्मा का सार है। यही ब्रह्म है। यहाँ ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत समाप्त हो जाता है।